बिहार में असहयोग आंदोलन और किसानः सन्दर्भ और मुद्दे

डॉ० नेहा कुमारी

1919 के आरंभ तक अखिल–भारतीय राजनीति में गाँधीजी का हस्तक्षेप अपेक्षाकृत कम रहा। यह एनी बेसेंट को नजरबंद किए जाने के विरोध एवं अली बंधुओं की रिहाई की बारंबार मांग तक ही सीमित रहा (जिनके माध्यम से वे पहले ही लखनऊ के अब्दुल बारी जैसे मुसलमान धार्मिक नेताओं के साथ संपर्क स्थापित करते आ रहे थे)। उन्होंने सुधार–प्रस्तावों में भी कोई खास दिलचस्पी नहीं ली, जबकि अधिकांश दूसरे राजनीतिज्ञों का ध्यान इन्हीं में लगा हुआ था। लेकिन फरवरी 1919 में रौलट एक्ट के पारित होने के फलस्वरूप जो उत्तेजना फैली, उसके चलते उन्होंने पहली बार एक अखिल–भारतीय सत्याग्रह आंदोलन आरंभ किया।